Postal Regn. - RTK/010/2023-25
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

मार्च 2024 (प्रथम)

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,124
विक्रम संवत् 2080
दयानन्दाब्द 200

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 20 अंक 3

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क
देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये
विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक
आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

मार्च, 2024 (प्रथम)
1 से 15 मार्च, 2024 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय–वेद-प्रवचन 2
2. विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी 3
3. स्वास्थ्य चर्चा–लहसुन के अनेक लाभ 4
4. आर्यसमाज और शिवरात्रि 5
5. स्वराज्य के अग्रदूत–स्वामी दयानन्द 7
6. लेखू से बने धर्मवीर आर्य मुसाफिर पं० लेखराम 9
7. महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज को सत्य-विवेकशील वैदिक परम्पराओं का मार्ग दिखाया 11
8. एक आदर्श परिवार जिसका राजनीति, समाजसेवा व आर्यसमाज में उल्लेखनीय योगदान रहा 13
9. समाचार-प्रभाग व शेषभाग 16

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

–सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन-उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

वेदमन्त्र

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित् कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्रं गृहं कृणुथा भद्रवाचो बृहद् वा वय उच्यते सभासु॥

(ऋग्वेद 6.28.6)

अन्वय-हे गाव:! यूयम् कृशम् चित् मेदयथ। अश्रीरम् चित् सुप्रतीकम् कृणुथ। हे भद्रवाच:! गृहम् भद्रम् कृणुथा व: वय: सभासु बृहद् उच्यते।

अर्थ-(गाव:) हे गायो! (यूयम्) तुम (कृशम् चित्) दुबले मनुष्य को (मेदयथ) मोटा बना देती हो। (अश्रीरम् चित्) श्रीरहित अर्थात् कुरूप को (सुप्रतीकम्) सुन्दर (कृणुथ) बना देती हो। (गृहम्) हमारे घर को (भद्रम्) कल्याणकारक (कृणुथ) बना दीजिए। (व:) तुम्हारा (वय:) जीवन (सभासु) हमारी सभाओं में (बृहद् उच्यते) बड़ा कहकर पुकारा जाता है।

व्याख्या-इस मन्त्र में गाय की समृद्धि का उल्लेख है। मनुष्यों और पशुओं में आत्मिक समानता तो है ही परन्तु भौतिक और सामाजिक सामंजस्य भी है। मनुष्य सृष्टि का मुख्यतम और श्रेष्ठतम वर्ग माना जाता है। परन्तु यदि वही केवल एक वर्ग होता, अन्य कोई पशु-पक्षी न होते तो उसे 'श्रेष्ठतम' होने का पद कैसे प्राप्त होता? जो मनुष्य समझते हैं कि हमीं सब-कुछ हैं, दूसरे कुछ नहीं, वे भूलते हैं। जितने प्राणिवर्ग हैं, चाहे पशु हों चाहे पक्षी, सब में विश्वैक्य (Universal kinship) है। जिस प्रकार सभी मनुष्य बराबर नहीं, फिर भी सम्बन्धी हैं, इसी प्रकार समस्त प्राणिवर्ग एक-से न होते हुए भी आपस में सम्बन्धी हैं। कुछ ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध अति निकट है, कुछ का बहुत दूर। जिसका सम्बन्ध निकटस्थ है, वे एक-दूसरे के जीवन के लिए अधिक उपयोगी हैं।

वेदों में तीन प्रकार के पशुओं को मनुष्य का अधिक सम्बन्धी बताया गया है-एक गोवर्ग, दूसरा अश्ववर्ग और तीसरा श्ववर्ग। गोवर्ग में सब पशु शामिल हैं, जो हमको दूध पिलाते हैं जैसे गाय, भैंस, बकरी। अश्ववर्ग में सब प्रकार के घोड़े, गधे, खच्चर, ऊँट आदि जो हमारी सवारी के काम आते हैं और तीसरा श्ववर्ग कुत्ते आदि जो हमारे घरों की रक्षा करते हैं। इन सब में गोवर्ग सबसे प्रिय, उपयोगी एवं श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि इस वर्ग की विशेषता है मातृवत् व्यवहार। यों तो हमको सदैव दूसरे प्राणियों की सहायता की आवश्यकता होती है, परन्तु गोवर्ग के बिना तो काम चलना ही नहीं। माता बच्चे को दूध पिलाती है, अत: माता को श्रेष्ठ कहा गया है। ऋग्वेद का निम्न मन्त्र विशेष ध्यान देने योग्य है-

वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत भ्रातुरभुञ्जत:।
माता च मे छदयथ: समा वसो वसुत्वनाय राधसे॥

(ऋग्वेद 8.1.6)

(इन्द्र) हे इन्द्र परमेश्वर! (मे पितु:) मेरे पिता से तू (वयस्याँ वसीयान्) बड़ा है (उत) और (अभुञ्जत: भ्रातु:) न पालने वाले भाई से भी। (वसो) हे वसु प्रभो! (मे माता च) मेरी माता तो (समा) तुझ जैसी हैं (छदयथ:) क्योंकि तुम दोनों मुझे पालते हो। (वसुत्वनाय राधसे) व्यापक धन या लाभ के लिए।

अर्थात् जब भक्त परोक्ष परमात्मा का ध्यान करता है और अपने प्रत्यक्ष घर वालों से प्रभु की तुलना करता है तो उसके अन्त:करण से यह आवाज उठती है कि हे प्रभो! तुम मेरे बाप और भाई से तो अवश्य बड़े हो परन्तु माँ के तुम बराबर ही प्रतीत होते हो। जैसे माता अपना समस्त स्वार्थ त्याग कर मेरा पालन करती है इसी प्रकार आप भी मेरे सच्चे पालक हैं।

जैसे भक्त उपासना के समय ईश्वर और माता की तुलना करता है इसी प्रकार यदि हम एक श्रेणी नीचे उतरकर माता और पशुओं की तुलना करने लगें तो नि:संकोच हमारे हृदय से यह बात निकलेगी कि हे माता! तू घोड़े, कुत्ते आदि पशुओं से तो बहुत बड़ी और माननीय है, परन्तु गाय तो मुझे तुझ जैसी ही प्रतीत होती है, क्योंकि तुम दोनों ही (छदयथ:) मेरा पालन करती हो।

क्रमश: अगले अंक में....

विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी

❑ संकलन–कन्हैयालाल आर्य, संरक्षक–आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

प्रश्न 35. क्षत्रिय किस प्रकार कल्याण (स्वर्ग) को प्राप्त होता है?

उत्तर-(1) जो क्षत्रिय वेद को पढ़ता है।

(2) जो क्षत्रिय अग्नियों को चारों ओर से कुशाओं से आच्छादित करता है।

(3) जो यज्ञ करता है अर्थात् अपने जीवन को यज्ञमय=परोपकारी बनाता है।

(4) जो प्रजाओं का पालन करता है।

(5) जो शस्त्र के आघात से पवित्र आत्मा वाला होकर संग्राम में मारा जाता है। यह कार्य वह गौ ब्राह्मण की रक्षा के निमित्त से करता है–ऐसा क्षत्रिय कल्याण को प्राप्त करता है, स्वर्ग को जाता है।

आचार्य युधिष्ठिर मीमांसक जी ने इन वाक्यों पर विशेष टिप्पणी की है–

(1) महर्षि मनु ने चारों वेदों का, तीन का, दो का अथवा एक वेद का अध्ययन करना प्रत्येक द्विजाति के लिए आवश्यक माना है।

(2) कुशाओं से अग्नि-कुण्ड के मध्य में जो वेदि का स्थान होता है, उसे आच्छादित किया जाता है।

(3) द्विजाति के लिए पांच अग्नियों को धारण करने का याज्ञिक ग्रन्थों में विधान है। वे क्रमशः आहवनीय, गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आवसत्य और सभ्य। प्रथम तीन अग्नियों में नित्य नैमित्तिक श्रौत यज्ञ होते हैं। आवसथ्य अथवा गृह अथवा स्मार्त अग्नि में गृहस्थ के संस्कार कर्म किये जाते हैं। सभ्याग्नि उस स्थान पर होती है, जहां आचार्य अपने शिष्यों को अध्ययन कराता है। सभा=शाला-पाठशाला में विद्यादान होने से वह अग्नि सभ्य कहाती है। यह गुरु शिष्य के मध्य में स्थापित होती है। गुरु इस अग्नि के साक्ष्य में स्वयमधीत शास्त्र का यथार्थ रूप में रहस्य गुह्य तत्त्वों को न छिपाते हुए अध्ययन कराता है।

श्रौतयज्ञ नित्य, नैमित्तिक और काम्य भेद से तीन प्रकार के माने गए हैं। इसमें नित्य यज्ञ (पंच महायज्ञ यथा ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या), देवयज्ञ (अग्निहोत्र), बलिवैश्वदेव यज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ) ही प्रधान हैं और ये निष्काम भाव से किये जाते हैं। अग्निहोत्र दर्शपौर्णमास, चतुर्मास्य ज्योतिष्टोम आदि नित्य=अवश्य कर्त्तव्य यज्ञ अपवर्ग=मोक्ष के साधक होते हैं।

(4) गौ-ब्राह्मण की रक्षा क्षत्रिय का परम पुरुषार्थ माना गया है। गौ भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण अंग है। अन्न पान आदि सभी गाय बैल से प्राप्त होते हैं, अतः गोरक्षा का विधान किया गया है।

प्रश्न 36. वैश्य किस प्रकार स्वर्ग के सुख को भोगता है?

उत्तर-(1) वैश्य गुरु=विद्वानों से वेदों को पढ़ें।

(2) वैश्य वेदों को पढ़कर, समय पड़ने पर ब्राह्मण, क्षत्रिय और अपने आश्रित भृत्य वर्ग को धन बांटे।

(3) तीन अग्नियों से उठे हुए यज्ञिय पवित्र गन्ध को सूंघकर अर्थात् पवित्र अग्नि से यज्ञ करे-ऐसा वैश्य मरकर आनन्द की स्थिति उत्तम=दिव्य सुखों को भोगता है।

प्रश्न 37. शूद्र कैसे स्वर्ग के सुख को भोगता है?

उत्तर-(1) शूद्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य की क्रमशः न्यायपूर्वक सेवा करे।

(2) अपनी सेवा के माध्यम से उन्हें प्रसन्न करे।

(3) सेवा करते हुए पीड़ा का अनुभव न करे।

(4) किसी प्रकार के पाप न करे।

ऐसा होने पर शूद्र मरने के पश्चात् स्वर्ग सुख को भोगता है।

वैदिक मर्यादा के अनुसार मनुष्य जाति को गुणकर्मानुसार चार विभागों में बांटकर उनके कर्मों का विधान किया है।

क्रमशः अगले अंक में...

स्वास्थ्य-चर्चा

लहसुन के अनेक लाभ

गतांक से आगे....

लहसुन के रस में जल अथवा पोदीने का रस मिलाकर सेवन करने से हैजे की विकृति में बहुत लाभ होता है। लहसुन के रस में पोदीने का रस मिलाकर सेवन करने से हैजे की विकृति नष्ट होती है।

लहसुन का सेवन कराने से पक्षाघात के रोगी को लाभ होता है। लहसुन के तेल की मालिश कराने से पक्षाघात के रोगी के अंगों में रक्त का संचार होने लगता है। संधिशूल व शोथ में लहसुन के तेल की मालिश से लाभ होता है।

लहसुन का उपयोग

मानव जीवन में लहसुन का महत्त्व–मनुष्य-जीवन में लहसुन बहुत उपयोगी पदार्थ सिद्ध हुआ है। वस्तुत: यह प्रकृति की अमूल्य एवं अद्वितीय देन है, जिसके गुणों को जान लिया जाय तो मनुष्य अपने को दीर्घजीवी बनाने में पूर्णरूपेण सफल हो सकता है।

वस्तुत: लहसुन मानव जीवन में आरोग्यता की एक ऐसी कुंजी है, जिसके द्वारा स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए एक अद्भुत औषधि भण्डार प्राप्त होता है। क्योंकि यह स्वस्थ मनुष्यों की आयु वृद्धि और रोगाक्रान्त मनुष्यों के रोगों के दूर करने की पूर्ण क्षमता रखता है।

इसके सेवन से सामान्य और कठिन दोनों प्रकार के रोगों में लाभ पाया जा सकता है। प्राचीन ऋषियों ने तो इसे अमृत के समान गुणकारी कहा ही है अर्वाचीन विद्वानों और अन्वेषकों ने भी अपने अनुभवों के आधार पर इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है, जो कि युक्तियुक्त ही है।

नाम एवं पहचान-'लहसुन' संस्कृत के 'लशुन' शब्द का अपभ्रंश अथवा परिवर्तित रूप है। इसे फारसी में 'शोर' और अरबी में 'खोम' कहते हैं।

अंग्रेजी में यह 'गार्लिक' कहलाता है। यह प्याज के आकार का एक कन्द है, जिसका रंग श्वेत-सा तथा स्वाद कटु-तीक्ष्ण होता है। इसकी प्रकृति गर्म और रूक्ष मानी जाती है।

लहसुन की किस्में-वनस्पति-शास्त्र के अन्वेषकों ने लहसुन की लगभग ढाई सौ जाति के पौधों का पता लगा लिया है। उनके रूप-रंग में में कुछ अन्तर होने पर भी गुण, कर्म प्रयोग में अधिक अन्तर नहीं पाया जाता। इनमें से कुछ जातियाँ कंद रूप में ही उत्पन्न होती हैं और कुछ जातियों में जब फूल आ-आकर गिर जाते हैं, तब उनके स्थान पर छोटी-छोटी गांठें जैसी बनने लगती हैं, जो धीरे-धीरे कन्द रूप धारण कर लेती हैं।

लहसुन की खेती-लहसुन की खेती करने वाले किसान इससे आर्थिक लाभ भी खूब उठाते हैं। उन्हें इसकी फसल प्राय: ग्रीष्म-ऋतु के आरम्भ में मिलती है। कृषक लोग अक्टूबर में इसकी बुवाई करते हैं। इसकी विधि यह है कि लहसुन की छोटी-छोटी गांठ पृथक्-पृथक् करे और लगभग डेढ़-डेढ़ फीट के अन्तर से एक-एक करके बो दें। ये गाँठें 6-7 सैंटीमीटर की गहराई में बोनी होती है।

कन्दों को अधिक मोटा करने के उद्देश्य से, पौधे बड़े हो जाने पर उनके पत्तों को एक साथ बांध देते हैं। इस विधि से पुष्पनाल नहीं निकलती और कन्द मोटे हो जाते हैं। फसल बोने के लिए कन्द की गांठों से नहीं, बीजों से भी काम लिया जाता है। फसल आने पर संग्रहार्थ गांठों को धूप में सुखाकर स्वच्छ वायु वाले सूखे स्थान में रखते हैं। जो लोग लहसुन का तेल निकालना चाहते हैं, वे तेल निकालकर बोतल में भर लेते हैं। यह तेल कन्दों से अथवा बीजों से भी निकाला जा सकता है। निकाले हुए तेल को कड़ी डाट लगाकर बन्द रखना होता है अन्यथा उड़नशीलता के कारण उसका उपयोग नहीं हो पाता।

चिकित्सा कार्य में उपयोग-लहसुन का चिकित्सा कार्य में ही उपयोग नहीं होता वरन् उसे सामान्य शाक-भाजी के स्थान पर भी खाया जाता है। परन्तु प्रयोग में लाने से पूर्व इसे स्वच्छ कर लिया जाए तो किसी प्रकार के अवगुण की आशंका प्राय: नहीं रहती। औषधि रूप में प्रयोग करने के लिए तो इसे पहले शुद्ध कर लेना चाहिए जिससे कि तीव्र गन्ध कम हो सके।

लहसुन शोधन-आयुर्वेद शास्त्र तो इसके शोधन की विधि भी देता है। इसका नियम यह है कि कन्द के ऊपर का छिलका उतारकर भीतर की कलियों को पृथक् कर लिया जाये। कलियों के ऊपरी आवरण को उतार कर उन्हें लम्बाई के रूप में चाकू से चीर दिया जाये और भीतर मध्य केन्द्र में जो उत्पादक अंकुर हो, उसे निकालकर फैंक दिया जाये।

क्रमश: अगले अंक में...

आर्यसमाज और शिवरात्रि

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य, संपर्क-B-2, 92/7B, शालीमार नगर, जिला होशियारपुर (पंजाब) मो० 9464064398

आर्यसमाज एक (धर्मसम्बद्ध) सामाजिक संगठन है। इसकी स्थापना 1875 में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मुम्बई में की थी। इसका मुख्य मन्तव्य 'संसार का उपकार' करना है। अत: यह एक मानव समाज के उत्थान के लिए कार्य करने वाला संगठन है। मानव उत्थान के लिए जिस-जिस क्षेत्र की जैसी-जैसी आवश्यकता होती है, उस-उस क्षेत्र में यह कार्य करता है। यह संगठन विशेष रूप से विचारों के प्रचार का कार्य करता है। इसका मूल धर्मग्रन्थ वेद है, जो कि ईश्वरीय ज्ञान है। वेद संसार के पुस्तकालय की प्राचीनतम पुस्तकें हैं। वेदों में मानव जीवन से सम्बद्ध सभी जरूरतों, बातों का विवेचन है।

गत शताब्दी का आर्यसमाज का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस संगठन ने मानव समाज के उत्थान के लिए शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बढ़कर कार्य किया। इस दृष्टि से आर्यसमाज हजारों विद्यालय, महाविद्यालय और गुरुकुलों का संचालन कर रहा है। महर्षि दयानन्द का जब 30 अक्तूबर 1883 में निधन हुआ। तब महर्षि की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए शिक्षा संस्था चलाने का संकल्प लेकर कार्य आरम्भ कर दिया गया। अत: 1886 के सत्र से दयानन्द ऐंग्लोवैदिक विद्यालय का सूत्रपात हुआ। वैसे 1864 से ही स्वामी दयानन्द ने वैदिक विचारों का प्रचार प्रारम्भ कर दिया था। इन वैदिक विचारों के नियमित, संगठित प्रचार-प्रसार के लिए ही महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। विचार ही मानव समाज के उत्थान का मूलमन्त्र है। जैसे जिसके विचार होते हैं, वैसा ही उसका आचार, व्यवहार होता है। विचारों के प्रसार के महत्त्व को सामने रखकर आर्यसमाज ने जहाँ साप्ताहिक सत्संगों का विशेष आयोजन सर्वप्रथम आरम्भ किया, वहाँ इसके साथ विचारों के विशेष प्रसारार्थ और सुदृढ़ करने के लिए समय-समय पर विविध पर्वों और वार्षिक उत्सव की परम्परा को भी प्रारम्भ किया।

पर्व-पर्व =त्यौहार-शब्द पृ (पूरणे) और प्री (तृप्तौ) से बनता है। अत: पर्व शब्द संगठन और प्रसन्नता अर्थ को प्रकट करता है। मानव समाज में संगठन की भावना तथा प्रसन्नता, उत्साह भरने के लिए ही पर्व आयोजित किये जाते हैं। समाज में ही व्यक्ति शक्ति, आशा, उत्साह, सुख अनुभव करता है। अकेला या अकेले में व्यक्ति उदास, निराश, हताश हो जाता है। इसीलिए कहा जाता है-'संगठन में शक्ति है' और 'मेले मेलियां दे'।

सबसे पहले ऋतु पर्व आरम्भ हुए। क्योंकि समय-समय पर ऋतुएं प्राकृतिक रूप में आती हैं। ऋतुओं का जहाँ फसलों, फूलों, फलों पर स्पष्ट प्रभाव होता है, वहाँ मनुष्य शरीर पर भी होता है। यतोहि मनुष्य शरीर भी पांच भौतिक होने से प्रकृति का अंश है। इसीलिए आयुर्वेद में स्वस्थ रहने और शरीर संवर्धन-संरक्षण के लिए ऋतुचर्या का विशेष विधान किया गया है। तभी तो ऋतु के अनुसार जीने की प्रेरणा देने के लिए ऋतुपर्वों का प्रचलन हुआ। ऐसे ही इतिहास के स्मरणार्थ ऐतिहासिक पर्व और धर्म की प्रेरणा के लिए धार्मिक पर्व भी मनाए जाते हैं।

आर्यसमाज विशेष रूप से ऋतु-ऐतिहासिक-धार्मिक तथा राष्ट्रीय पर्व आयोजित करता है। वैसे आजकल गणेश चतुर्थी, दुर्गाष्टमी आदि देवों से सम्बद्ध पर्व भी आयोजित होते हैं। जो कि संख्या में बहुत अधिक हैं तथा अलग-अलग प्रदेशों में अपने-अपने ढंग से मनाये जाते हैं। विविध देवों की सत्ता, स्थिति कल्पनाजन्य है। अत: इनका स्वरूप स्पष्ट नहीं है। अत: आर्यसमाज देवों से सम्बद्ध पर्वों को आयोजित नहीं करता। हाँ, आर्यसमाज सूर्य, चन्द्र, जल, वायु आदि प्राकृतिक देवों के अधिपति महान्देव परमात्मा की ही परमसत्ता को स्वीकार करता है, जो कि सर्वव्यापक, नित्य, चेतन और सर्वज्ञ आदि गुणयुक्त है। ऐसा गुणयुक्त परमात्मा ही आर्यसमाज की मान्यता के अनुसार पूजनीय, उपासनीय है। क्योंकि केवल ईश्वर ही संसार का उत्पादक, पालक और नियामक है। अत: आर्यसमाज ईश्वरभक्ति की दृष्टि से ईश्वर की ही स्तुति-प्रार्थना-उपासना वेदमन्त्रों से करता है। वेद सर्वज्ञ प्रभु का ज्ञान है। अत: वेदों में सर्वज्ञ प्रभु ने पूजा की पूरी विधि बताई है।

आज के प्रचलित पर्वों में शिवरात्रि पर्व का एक विशेष स्थान है। शिवरात्रि का शिव जहाँ एक ओर शरीरधारी, पार्वती आदि के साथ सम्बन्धों से सम्बद्ध है तथा उसकी अनेक ऐतिहासिक घटनाएं प्रसिद्ध हैं, वहां उसी सांस में संसारस्रष्टा

रूप में भी चित्रित किया जाता है। जबकि हमारे सारे शास्त्र ईश्वर को अजन्मा, नित्य, निराकार ही मानते हैं।

आज जहां विद्या तथा विज्ञान का जितना विकास हो रहा है वहां शिव का स्वरूप उतना ही अनिश्चित, परस्पर विरुद्ध, अस्पष्ट बनाया जा रहा है। शिवव्रत से जुड़ी शिकारी की कथा तो सारी प्रक्रिया को अनिश्चित, अस्पष्ट बना देती है। विज्ञान और अनिश्चय का क्या मेल? शिवव्रत के जो फल दर्शाये जाते हैं, वे आज कहीं चरितार्थ नहीं होते। जबकि सत्य तो तीनों कालों में एकसा चरितार्थ होता है। वस्तुत: सत्य उसी को कहा जाता है, जो तीनों कालों में एक-सा चरितार्थ हो।

शिव शब्द का अर्थ है-कल्याण, मंगल। शिव के शम्भु, शंकर, मृड, मय, मयस्कर आदि जितने भी पर्याय शब्द हैं। वे सब सुख, कल्याण, मंगलवाचक हैं। जबकि रूढ़ि रूप में शिव को प्रलय का कार्य सौंप दिया गया है। इसीजिए शिवपुरी श्मशान का नाम रूढ़ हो गया है। शिव के इस रूढ़ि अर्थ के कारण हमने एक ईश्वर के तीन रूप बना दिए। क्योंकि रूढ एक ही कार्य में समर्थ होता है तब दूसरे कार्यों को करने में उसको असक्त मानकर तीन कार्यों के लिए तीन ईश्वरों को (ब्रह्मा, विष्णु, शिव रुद्र महादेव) रूप में कल्पित करना पड़ रहा है। जबकि वेद आदि शास्त्र सर्वत्र एक ईश्वर की ही चर्चा करते हैं। एक ईश्वर ही सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी सिद्ध होता है।

आर्यसमाज की यह सुनिश्चित धारणा है कि परमात्मा का स्वरूप सर्वदा-सर्वथा स्पष्ट, सुनिश्चित है। वेद आदि हमारे शास्त्र ईश्वर का '**स पर्यगात्**' (यजु० 40.8) '**अकामो धीर:**' (अ० 10.8.44) के रूप में यह स्पष्ट, सुनिश्चित स्वरूप समझाते हैं। ईश्वर इस संसार को चलाने के लिए सैकड़ों कार्य करता है। जैसे कि व्यवहार में भिन्न-भिन्न कार्यों के आधार पर किसी व्यक्ति को उन-उन कर्म नामों (पाचक, हाली, माली आदि) से पुकारते हैं। तब अनेक नामों से वह व्यक्ति अनेक नहीं होता। ऐसे ही ईश्वर के अनेक नाम होने से उसको अनेक रूप में कल्पित नहीं करना चाहिए। इसीलिए वेद आदि शास्त्रों में कहा है कि गुण-कर्म-स्वभाव के भेद से एक ईश्वर ही अग्नि, इन्द्र, विष्णु, वरुण आदि नामों से पुकारा जाता है। (ऋ० 1.164.46) विस्तार से यह बात 'वेद की कुंजी' में देखी जा सकती है। वहां इसके लिए ऋग्-यजु और उपनिषद्, मनुस्मृति के प्रमाण दिए हैं।

आर्यसमाज शिवरात्रि के पर्व पर पहला सन्देश यही देता है कि आओ! ईश्वर के स्वरूप को स्पष्ट और सुनिश्चित रूप में समझें। जब कि विद्या, विज्ञान के कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्पष्टता आ रही है। वैसे ही ईश्वर के सम्बन्ध में होना चाहिए। जब प्रभु सबसे प्रकृष्ट हैं। जीवन और जगत् में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। तब इसके विषय में अनिश्चय, भटकाव, दुहरापन क्यों हो?

यह तो एक प्रकार से भटकाव का ही लक्षण है, जब हम यह कहते हैं कि यह सब चलता है, यह भी हो सकता है, ऐसा भी समझ लो। लोकतंत्र का अर्थ अनिश्चय, भटकाव नहीं। जब हमारी दूसरी बातें निश्चित हैं, फिर ईश्वर जैसी मुख्य बात में संशय अनिश्चय क्यों? अनिश्चय, संशय, सन्देह से व्यक्ति मंजिल, लक्ष्य पर नहीं पहुँच सकता, अपितु भटकता रहता है। अनिश्चय में पड़ा रहता है। इससे कोई कार्य सिद्ध नहीं होता। एक ही काल में एक ही स्थान पर परस्पर विरुद्ध स्वरूप किसी का नहीं होता है। जैसे कि साकार-निराकार, सर्वव्यापक-एकदेशी परस्पर विरुद्ध भावों को दर्शाते हैं। अत: ये एक में एक काल में नहीं होते।

शिवरात का दूसरा सन्देश यह भी है कि शिव शब्द के कल्याण, मंगल अर्थ के अनुरूप हम इस पर्व को मनाते हुए सबसे पहले यह समझने का यत्न करें कि हमारा कल्याण, मंगल किस-किस बात में है? किस कार्य को कैसे, कितना करने में मंगल है? विचार करने पर प्रत्येक समझ सकता है कि मेरा कल्याण किस में है? जैसे कि हम चाहते हैं कि-

1. कोई भी मेरे साथ औखे होकर अर्थात् सभी मेरे साथ शिष्टता से बोले।
2. प्रत्येक मेरे साथ सच्चे-सुच्चेपन (ईमानदारी) का व्यवहार करें अर्थात् कोई भी कहीं भी, कभी भी धोखा न करे।
3. कोई भी मेरी चीजों की किसी रूप में चोरी, हेराफेरी न करे, किसी प्रकार से जबरदस्ती न करे।
4. प्रत्येक मुझ से स्नेहपूर्वक वर्ताव करे।
5. जैसे मैं दूसरों से अच्छे की आशाकरता हूँ, वैसे ही दूसरे भी मुझसे करते हैं। अत: मुझे भी दूसरों के प्रति ऐसा वर्ताव करना चाहिए।

हाँ, शिवरात्रि 1838 में मूलशंकर द्वारा व्रत रखने पर घटित घटना का भी स्मरण कराती है। जैसे कि पूर्व कहा है कि शिव का अर्थ कल्याण है और रात्रि समय का एक भाग है। अत: शिवरात्रि का अर्थ हुआ कल्याण का अवसर।

स्वराज्य के अग्रदूत—स्वामी दयानन्द

❑ स्व० उमाकान्त उपाध्याय, कलकत्ता

भारतवर्ष में 19वीं शताब्दी नवजागरण का काल है। नवजागरण के आदि पुरुष राजा राममोहन राय थे। उन्होंने अपने मिशन की पूर्ति के लिए ब्रह्मसमाज की स्थापना की थी। राजा राममोहन राय अंग्रेजों के राज्य और अंग्रेजी भाषा को भारतवर्ष के लिए ईश्वर का वरदान मानते थे। अत: राजा राममोहन राय समाज सुधार के कार्य में तो लगे किन्तु स्वराज्य का चिन्तन उनके लिए कुछ विशेष महत्त्व न रखता था। स्वामी दयानन्द का काल राजा राममोहन राय से लगभग 50 वर्ष पीछे है। स्वामी दयानन्द का जन्म 1824-25 में हुआ था और 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के वे प्रत्यक्षदर्शी थे। बहुत सारे इतिहासज्ञ का मत है कि स्वामी दयानन्द ने संन्यासी के रूप में उस समय प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया था। उनके ग्रन्थों में भी ऐसे अन्त:प्रमाण उपस्थित हैं जो उनके सक्रिय भाग लेने का समर्थन करते हैं।

1857 का स्वतन्त्रता संग्राम असफल हो चुका था। अंग्रेजों का प्रभुत्व सारे देश पर स्थापित हो चुका था। महारानी विक्टोरिया ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से शासन ले लिया था और भारतवर्ष का शासन सीधे तौर पर बर्तानिया सरकार के हाथ में चला गया था। महारानी विक्टोरिया ने भारतवर्ष के लिए प्रसिद्ध घोषणा पत्र प्रसारित कर दिया था जिसके अनुसार अंग्रेज सरकार भारतवर्ष की प्रजा के साथ पूर्ण न्याय करेगी, किसी के साथ धार्मिक दृष्टि से कोई पक्षपात नहीं होगा और अंग्रेज सरकार भारतवर्ष की सुख-सुविधा का ध्यान रखेगी। स्वामी दयानन्द ने अपने युग निर्माता क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में महारानी विक्टोरिया की इस घोषणा को सुस्पष्ट उत्तर दिया है-

अब अभाग्योदय से आर्यावर्त में आर्यों का अखण्ड स्वतन्त्र स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों को पादाक्रान्त हो रहा है। राज्य कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है, परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक् शिक्षा अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है।

जहाँ स्वामी दयानन्द ने अपने लेखों-व्याख्यानों में, प्रार्थना की पुस्तकों में, सर्वत्र सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र स्वराज्य के लिए प्रार्थना की है, वहीं ब्रह्मसमाज के नेताओं की अंग्रेजी राज्य के प्रति भक्ति प्रशंसा स्वामी दयानन्द के विचारों के अनुकूल नहीं थी और वे खुलकर इस सम्बन्ध में उनकी आलोचना करते थे। केशवचन्द्र सेन ब्राह्मसमाज के प्रसिद्ध नेता थे और वे ईसाइयों से और ईसाई सम्प्रदाय से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने अपना पूजा स्थान मन्दिर न बनाकर गिरिजाघर बनवाया था। स्वामी दयानन्द यह सब कुछ विदेशी राज्य और उसकी भक्ति का फल मानते थे। उन्होंने ब्राह्मसमाज की आलोचना में लिखा है-"इन लोगों में स्वदेशभक्ति बहुत न्यून है। ईसाइयों के बहुत से आचरण ले लिये हैं। खान-पान, विवाह आदि के नियम भी बदल दिये हैं। अपने देश की प्रशंसा और पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही, उसके स्थान में भरपेट निन्दा करते हैं। व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भरपेट करते हैं।" स्वामी दयानन्द भारतवर्ष के लिए देशभक्ति और अपने इतिहास तथा महापुरुषों की प्रतिष्ठा को बहुत महत्त्व देते थे। स्वदेशभक्ति का एक प्रखर प्रमाण सत्यार्थप्रकाश के निम्न उद्धरण में मिलता है-"भला जब आर्यावर्त में उत्पन्न हुए हैं, इसी देश का अन्न-जल खाया-पिया, अब भी खाते-पीते हैं तब अपने माता-पिता, पिता-महादि के मार्ग को छोड़कर दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना ब्रह्मसमाजी और प्रार्थना समाजियों का एतद् देशस्थ संस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करना इंगलिश भाषा पढ़ के पण्डिताभिमानी होकर झटिति एकमत चलाने में प्रवृत्त होना मनुष्यों का वृद्धिकारक काम क्योंकर हो सकता है?"

स्वामी दयान्नद ने अंग्रेजों की उपनिवेशवादी नीतियों का भी खुलकर विरोध किया है। यहाँ तक कि अंग्रेज लेखकों ने उन्हें बागी-फकीर या विद्रोही संन्यासी की उपाधि दे डाली थी। पीछे उनकी पुस्तकों पर इलाहाबाद में जस्टिस हैरिंगटन की अदालत में अभियोग भी चला था। उन्होंने अंग्रेजों द्वारा भारतीय जनता पर लगाये गये नमक कर, जंगली उत्पाद पर चुंगी और सरकारी कागजों के मूल्य स्टैंप-ड्यूटी का जमकर

विरोध किया है और यह सब 1875 ई० का काम है। महात्मा गांधी न नमक कर का विरोध 1930 ई० में किया था और स्वामी दयानन्द ने महात्मा गांधी से 55 वर्ष पूर्व नमक कर के विरुद्ध आवाज उठाई थी। वे लिखते हैं-''एक तो यह बात है कि जो नोन (नमक) और पौनरोटी (चुंगी) में जो कर लिया जाता है, वह मुझको अच्छा नहीं मालूम देता क्योंकि नोन के बिना दरिद्र का भी निर्वाह नहीं होता, किन्तु सबको नोन की आवश्यकता होती है। वे मजूरी-मेहनत से जैसे-तैसे निर्वाह करते हैं। उनके ऊपर भी यह नोन का कर दण्ड तुल्य है। पौनरोटी (चुंगी) से भी गरीब लोगों को बहुत क्लेश होता है क्योंकि गरीब लोग कहीं से घास छेदन करके ले आये व लकड़ी का भार ले आये उनके ऊपर कौड़ियों के लगाने से उनको अवश्य क्लेश होगा इससे पौनरोटी (चुंगी) का जो कर स्थापना करना, सो भी हमारी समझ से अच्छा नहीं।'' वे आगे स्टैंप ड्यूटी का विरोध करते हुए लिखते हैं-''सरकार कागज (स्टैंप) को बेचती है और बहुत-सा कागजों पर धन बढ़ा दिया है, इससे गरीब लोगों को बहुत क्लेश पहुँचता है सो यह बात राजा को करनी उचित नहीं है। कचहरी में बिना धन के कुछ बात होती नहीं। इससे जो कागजों के ऊपर धन लगाना है सो भी मुझको अच्छा मालूम नहीं देता।''

इन्हीं सब बातों को देखकर भारतीय संसद के प्रथम अध्यक्ष श्री अनन्त शयनम् आयंगर ने स्वामी दयानन्द को राष्ट्रपितामह की उपाधि दी थी। श्री आयंगर जी कहते हैं-''गांधी जी अगर राष्ट्र के पिता थे तो महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्र के पितामह थे। महर्षि जी हमारी राष्ट्रीय प्रवृत्ति और स्वाधीनता आन्दोलन के आद्य प्रवर्तक थे। गांधी जी उन्हीं के पदचिह्नों पर चले। यदि महर्षि हमें मार्ग न दिखाते तो अंग्रेजी शासन में उस समय सारा पंजाब मुसलमान हो जाता और सारा बंगाल ईसाई हो जाता।''

सरदार वल्लभ भाई पटेल की दृष्टि में स्वामी दयानन्द स्वराज्य के प्रथम उद्गाता थे। वे कहते हैं-''बहुत से लोग महर्षि दयानन्द को सामाजिक और धार्मिक सुधारक कहते हैं, परन्तु मेरी दृष्टि में वे सच्चे राजनीतिज्ञ थे, जिन्होंने सारेदेश में एक भाषा, खादी, स्वदेश प्रचार, पंचायतों की स्थापना, दलितोद्धार, राष्ट्रीय और सामाजिक एकता, प्रचण्ड देशाभिमान और स्वराज्य की घोषणा यह सब बहुत पहले, सर्वप्रथम देश को दिया था।'' स्वामी दयानन्द यह समझते थे कि देश का उद्धार स्वराज्य से ही होगा और साथ ही कृषि और उद्योग की उन्नति के लिए वे बहुत प्रयत्नशील थे। उनका मानना था कि कृषि की उन्नति और पशुओं की रक्षा किये बिना सम्भव नहीं है। इसीलिए उन्होंने 'गोकृष्यादि रक्षिणी' सभा का प्रस्ताव ही नहीं किया, वे उसके लिए प्रयत्नशील भी रहे। अंग्रेजों की नीति भारत के परम्परागत उद्योगों को मिटाने की थी। अंग्रेजी उत्पाद को बढ़ाने के लिए वे भारत के कारीगरों, बुनकरों आदि को बहुत कष्ट देते थे। स्वामी दयानन्द ने स्वदेशी का आन्दोलन तो चलाया ही साथ ही भारतीय युवकों को उद्योग-धन्धों की शिक्षा पाने के लिए जर्मनी के एंक प्रिंसिपल वाइज के साथ पत्राचार कर उन्हें भेजने की व्यवस्था की। इस प्रकार कांग्रेस से 50 वर्ष पूर्व ही स्वामी दयानन्द ने स्वराज्य और स्वदेशी के लिए सक्रिय एवं प्रचण्ड प्रयास किया था। **(साभार-टंकारा समाचार, अगस्त 2023)**

'आर्य प्रतिनिधि' के स्वामित्व आदि का विवरण
फार्म - 4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	-	दयानन्दमठ, रोहतक
2.	प्रकाशन अवधि	-	पाक्षिक
3.	मुद्रक का नाम	-	उमेद सिंह शर्मा
	क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
	पता	-	सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
4.	प्रकाशक का नाम	-	उमेद सिंह शर्मा
	क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
	पता	-	दयानन्दमठ, रोहतक
5.	सम्पादक का नाम	-	उमेद सिंह शर्मा
	क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
	पता	-	सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
6.	उन उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों।		आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक इसके प्रकाशन का सम्पूर्ण आय-व्यय वहन करता है। अन्य कोई हिस्सेदार नहीं है।

मैं, उमेद सिंह शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
(उमेद सिंह शर्मा)

लेखू से बने धर्मवीर आर्य मुसाफिर पं० लेखराम

❑ आचार्य सोमदेव, आर्ष गुरुकुल मलारना चौड़, सवाई माधोपुर (राज०)

लेखराम का जन्म 8 चैत्र, संवत् 1915 (1858 ई०) को झेलम जिला के तहसील चकवाल के सैदपुर गाँव (अब पाकिस्तान में) में हुआ था। उनके पूर्वज महाराजा रणजीत सिंह फौज में थें। उनके पिता का नाम तारा सिंह एवं माता का नाम भाग भरी था।

उन्होंने आरम्भ में उर्दू-फारसी पढ़ी। बचपन से ही स्वाभिमानी और दृढ़ विचारों के थे। एक बार उनको पाठशाला में प्यास लगी, मौलवी से घर जाकर पानी पीने की इजाजत मांगी। मौलवी ने जूठे मटके से पानी पीने को कहा। उन्होंने न दोबारा मौलवी से घर जाने की इजाजत मांगी और न ही जूठा पानी पिया। सारा दिन प्यासा ही बिता दिया। पढ़ने का उनको बहुत शौक था। मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी की पुस्तकों से उनको स्वामी दयानंद सरस्वती का पता चला। लेखराम जी ने ऋषि दयानन्द के सभी ग्रंथों का स्वाध्याय आरम्भ कर दिया।

सत्रह वर्ष की उम्र में वे सन् 1875 ईसवी में पेशावर पुलिस में भरती हुए और उन्नति करके सारजेंट बन गए। इन दिनों इन पर 'गीता' का बड़ा प्रभाव था। दयानंद सरस्वती से प्रभावित होकर उन्होंने संवत् 1937 विक्रमी में पेशावर में आर्यसमाज की स्थापना की। 17 मई सन् 1880 को उन्होंने अजमेर में स्वामी जी से भेंट की। शंका-समाधान के परिणाम-स्वरूप वे उनके अनन्य भक्त बन गए। लेखराम जी ने सन् 1884 में पुलिस की नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया। अब उनका सारा समय वैदिक धर्मप्रचार में लगने लगा। कादियाँ के अहमदियों ने हिंदूधर्म के विरुद्ध कई पुस्तकें लिखी थीं। लेखराम जी ने उनका जोरदार खण्डन किया। कोट छुट्टा डेरा गाजी खान (अब पाकिस्तान) में कुछ हिन्दू युवकों को बहकाकर मुस्लिम बनाया जा रहा था। पंडित जी के व्याख्यान सुनने पर ऐसा रंग चढ़ा कि वे वैदिकधर्मी बन गए। इनके नाम थे महाशय चोखानंद, श्री छबीलदास व महाशय खूबचंद।

जम्मू के श्री ठाकुरदास मुसलमान होने जा रहे थे। पंडित जी उनसे जम्मू जाकर मिले और उन्हें मुसलमान होने से बचा लिया।

1891 में सिंध के हैदराबाद के श्रीमन्त सूर्यमल की संतान ने इस्लाम मत स्वीकार करने का मन बना लिया। पंडित पूर्णानन्द जी को लेकर आप हैदराबाद पहुंचे। उस धनी परिवार के लड़के पंडित जी से मिलने के लिए तैयार नहीं थे। पर आप कहाँ मानने वाले थे। चार बार सेठ जी के पुत्र मेवाराम जी से मिलकर यह आग्रह किया की मौल्वियों से उनका शास्त्रार्थ करवा दे। मौलवी सय्यद मुहम्मद अली शाह को तो प्रथम बार में ही निरुत्तर कर दिया। उसके बाद चार और मौल्वियों से पत्रों से विचार किया। आपने उनके सम्मुख मुसलमान मौल्वियों को हराकर उनकी धर्म रक्षा की।

वही सिंध में पंडित जी को पता चला की कुछ युवक ईसाई बनने वाले हैं। आप वहाँ पहुच गए और अपने भाषण से वैदिक धर्म के विषय में प्रकाश डाला। आदम और इव पर एक पुस्तक लिखकर बांटी जिससे कई युवक ईसाई होने से बच गए।

पंडित जी से दीक्षा लेकर कुछ आर्यों ने 1885 में गंगोह जिला सहारनपुर में आर्यसमाज की स्थापना की थी। कुछ वर्ष पहले तीन अग्रवाल भाई पतित होकर मुसलमान बन गए थे। आर्यसमाज ने 1894 में उन्हें शुद्ध करके वापिस वैदिक धर्मी बना दिया। आर्यसमाज के विरुद्ध गंगोह में तूफान ही आ गया। श्री रेहतूलाल जी भी आर्यसमाज के सदस्य थे। उनके पिता ने उनके शुद्धि में शामिल होने से मना किया पर वे नहीं माने। पिता ने बिरादरी का साथ दिया। उनकी पुत्र से बातचीत बंद हो गयी। पर रेहतूलाल जी कहाँ मानने वाले थे? उनका कहना था गृहत्याग कर सकता हूँ, पर आर्यसमाज नहीं छोड़ सकता । इस प्रकार पंडित लेखराम के तप का प्रभाव था कि उनके शिष्यों में भी वैदिक सिद्धांत की रक्षा हेतु भावना कूट-कूट कर भरी थी।

घासीपुर जिला मुजफ्फरनगर में कुछ चौधरी मुसलमान बनने जा रहे थे। पंडित जी वहां एक तय की गयी तिथि को पहुँच गए। उनकी दाड़ी बढ़ी हुई थी और साथ में मूंछें भी थी। एक मौलाना ने उन्हें मुसलमान समझा और पूछा, क्यों जी यह दाढ़ी तो ठीक हैं पर इन मूंछों का क्या राज हैं? पंडित जी बोले दाढ़ी तो बकरे की होती है मूंछें तो शेर की होती हैं। मौलाना समझ गया कि यह व्यक्ति मुसलमान नहीं है। तब पंडित जी ने अपना परिचय देकर शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। सभी मौलानाओं को परास्त करने के बाद पंडित जी ने वैदिक धर्म पर भाषण देकर सभी चौधरियों को मुसलमान बनने से बचा लिया।

1896 की एक घटना पंडित लेखराम के जीवन से हमें

सर्वदा प्रेरणा देने वाली बनी रहेगी। पंडित जी प्रचार से वापिस आये तो उन्हें पता चला की उनका पुत्र बीमार है। तभी उन्हें पता चला की मुस्तफाबाद में पांच हिन्दू मुसलमान होने वाले हैं। आप घर जाकर दो घंटे में वापिस आ गए और मुस्तफाबाद के लिए निकल गए। आपने कहा कि मुझे अपने एक पुत्र से जाति के पांच पुत्र अधिक प्यारे हैं। पीछे से आपका सवा साल का इकलौता पुत्र चल बसा। पंडित जी के पास शोक करने का समय कहाँ था। आप वापिस आकर वेदप्रचार के लिए वजीराबाद चले गए। पंडित जी की तर्क शक्ति गज़ब थी। आपसे एक बार किसी ने प्रश्न किया की हिन्दू इतनी बड़ी संख्या में मुसलमान कैसे हो गए। आपने सात कारण बताये–

1. मुसलमान आक्रमण में हिन्दुओं को बलात्पूर्वक मुसलमान बनाया गया।
2. मुसलमानी राज में जर, जोरू व जमीन देकर कई प्रतिष्ठित हिन्दुओं को मुसलमान बनाया गया।
3. इस्लामी काल में उर्दू, फारसी की शिक्षा एवं संस्कृत की दुर्गति के कारण बने।
4. हिन्दुओं में पुनर्विवाह न होने के कारण व सती-प्रथा पर रोक लगने के बाद हिन्दू औरतों ने मुसलमान के घर की शोभा बढाई तथा अगर किसी हिन्दू युवक का मुसलमान स्त्री से सम्बन्ध हुआ तो उसे जाति से निकालकर मुसलमान बना दिया गया।
5. मूर्तिपूजा की कुरीति के कारण कई हिन्दू विधर्मी बने।
6. मुसलमानी वेश्यायों ने कई हिन्दुओं को फंसाकर मुसलमान बना दिया।
7. वैदिक धर्म का प्रचार न होने के कारण मुसलमान बने।

पंडित जी और गुलाम मिर्जा अहमद संपादित करें–

पंडित जी के काल में कादियान, जिला गुरुदासपुर पंजाब में इस्लाम के एक नए मत की वृद्धि हुई जिसकी स्थापना मिर्जा गुलाम अहमद ने करी थी। इस्लाम के मानने वाले मुहम्मद साहिब को आखिरी पैगम्बर मानते हैं, मिर्जा ने अपने आपको कभी कृष्ण, कभी नानक, कभी ईसा मसीह कभी इस्लाम का आखिरी पैगम्बर घोषित कर दिया तथा अपने नवीन मत को चलने के लिए नई-नई भविष्यवाणिया और इल्हामो का ढोल पीटने लगा।

एक उदहारण मिर्जा द्वारा लिखित पुस्तक 'वही हमारा कृष्ण' से लेते हैं। इस पुस्तक में लिखा हैं–''उसने (ईश्वर ने) हिन्दुओं की उन्नति और सुधार के लिए निष्कलंकी अवतार को भेज दिया है जो ठीक उस युग में आया है जिस युग की कृष्ण जी ने पहिले से सूचना दे रखी है। उस निष्कलंक अवतार का नाम मिर्जा गुलाम अहमद है जो कादियान जिला गुरुदासपुर में प्रकट हुए हैं। खुदा ने उनके हाथ पर सहस्त्रों निशान दिखाये हैं। जो लोग उन पर इमान लेंते हैं, उनको खुदा ताला बड़ा नूर बख्शता है। उनकी प्रार्थनाएं सुनता है और उनकी सिफारिश पर लोगों के कष्ट दूर करता है, प्रतिष्ठा देता है। आपको चाहिए कि उनकी शिक्षाओं को पढ़कर नूर प्राप्त करें। यदि कोई संदेह हो तो परमात्मा से प्रार्थना करे कि हे परमेश्वर! यदि यह व्यक्ति जो तेरी और से होने की घोषणा करता है और अपने आपको निष्कलंक अवतार कहता है, अपनी घोषणा में सच्चा है तो उसके मानने की हमें शक्ति प्रदान कर और हमारे मन को इस पर इमान लेने को खोल दे। पुन आप देखेंगे कि परमात्मा अवश्य आपको परोक्ष निशानों से उसकी सत्यता पर निश्चय दिलवाएगा। तो आप सत्य हृदय से मेरी और प्रेरित हों और अपनी कठिनाइयों के लिए प्रार्थना करावें। अल्लाह ताला आपकी कठिनाइयों को दूर करेगा और मुराद पूरी करेगा। अल्लाह आपके साथ हो। पृष्ठ 6,7.8 वही हमारा कृष्ण।''

पाठकगण स्वयं समझ गए होंगे कि किस प्रकार मिर्जा अपनी कुटिल नीतिओं से मासूम हिन्दुओं को बेवकूफ बनाने की चेष्ठा कर रहा था पर पंडित लेखराम जैसे रणवीर के रहते उसकी दाल नहीं गली।

पंडित जी सत्य-असत्य का निर्णय करने के लिए मिर्जा के आगे तीन प्रश्न रखे–

1. पहले मिर्जा जी अपने इल्हामी खुदा से धारावाही संस्कृत बोलना सीखकर आर्यसमाज के दो सुयोग्य विद्वानों पंडित देवदत शास्त्री व पंडित श्यामजीकृष्ण वर्मा का संस्कृत वार्तालाप में नाक में दम कर दे।
2. छः दर्शनों में से केवल तीन के आर्ष भाष्य मिलते हैं। शेष तीन के अनुवाद मिर्जा जी अपने खुदा से मंगवा लें तो मैं मिर्जा के मत को स्वीकार कर लूँगा।
3. मुझे 20 वर्ष से बवासीर का रोग है। यदि तीन मास में मिर्जा अपनी प्रार्थना शक्ति से उन्हें ठीक कर दे तो में मिर्जा के पक्ष को स्वीकार कर लूँगा।

पंडित जी ने उससे पत्र लिखना जारी रखा। तंग आकर मिर्जा ने लिखा कि यहीं कादियान आकर क्यों नहीं चमत्कार देख लेते। सोचा था कि न पंडित जी का कादियान आना

शेष पृष्ठ 16 पर....

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज को सत्य विवेकशील वैदिक परम्पराओं का मार्ग दिखाया

❑ पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के उपदेशों में कहा गया है कि स्वस्थ समाज की प्रगति में स्वस्थ रीति-रिवाजों एवं सत्य परम्पराओं का विशेष योगदान होता है। सत्य वेदानुकूल परम्परात प्रचलन ऐसे हैं जो सदैव स्वस्थ समाज की प्रगति में सहायक हैं, किन्तु अनेक अन्ध परम्पराओं व रूढ़िवादी प्रचलनों को उखाड़ फेंका जाना चाहिए। समाज का स्वस्थ निर्माण तब तक सम्भव नहीं जब तक कि हम व्यर्थ अविवेकाशील सिद्धान्तहीन परम्पराओं से ग्रसित प्रचलनों को दूर करने में आमूलचूल क्रान्ति नही करेंगे। बिछड़ेपन की ओर ले जाने वाली अवैज्ञानिक व सृष्टिक्रम के विरुद्ध अप्रासंगिक समझी जाने वाली रूढ़ि मान्यताओं, अन्धविश्वासों से मुक्ति पानें का सर्वप्रथम प्रयास होना चाहिए।

हम-हिन्दू-मुसलमान-ईसाई व अन्य अलगाववादी अन्ध परम्पराओं से लिपटे हुए हैं-आज के सामाजिक व्यवस्था के संस्कारों में झूठी मर्यादा में हिन्दू-मुसलमान-ईसाई क्यों है, क्योंकि प्रत्येक मत के बच्चों को मां के पेट से अपने मतों के संस्कार दिये जाते हैं और जो-जो बच्चा जिस समूह में जन्म लेता है उसके मत के संस्कार उसके चित पर अंकित हो जाते हैं। वह उसकी परम्परा बन जाती है वह अपने को पूर्णरूप से हिन्दू-मुसलमान-ईसाई व अन्य समझकर उस मत के विपरीत एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता है। वह उस मत को अपनी मर्यादा समझ लेता हैं। बस संसार में अशान्ति व मनुष्य को बांटने का यही कारण है। मानव को केवल वेद वैदिक शिक्षा मार्ग ही एक सूत्र में बांध सकता है।

ईश्वर ने प्राणिमात्र के लिए इस विशाल सृष्टि का निर्माण किया है और मानव सब प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ योनि है। प्रत्येक प्राणी को जीवन जीने के पदार्थ भी बनाये हैं और मानवमात्र को सुखी जीवन की कर्म व्यवस्था में वेदों का ज्ञान भी दिया है और मनुष्य को बुद्धि विशेष देकर कर्म करने में स्वतन्त्र भी किया हुआ है, किन्तु कर्मफल प्रदान ईश्वरीय हाथ में है। संसार में मानव ने अपने स्वार्थ के लिए मनुष्यों को वर्गवाद, जातिवाद, अलग-अलग मतों में बांटकर अलगाववाद की खाई खोद रखी है। मनुष्य जिस वर्ग में जन्म लेता है उसको गर्भ से ही उस मत के अर्थात् हिन्दू-मुसलमान-ईसाई आदि के संस्कार गर्भ से लेकर आजीवन थोप दिये जाते हैं और मनुष्य ईश्वरीय व्यवस्था को भूलकर आपस में अपने व्यर्थ वर्गवाद को लेकर एक-दूसरे से अपने को बड़ा समझते हैं। आपस में अपने अहं को लेकर विवाद में रहते हैं। इसलिए ईश्वरीय प्रदत्त धर्म वैदिक धर्म जो सृष्टिक्रमानुसार व वैज्ञानिक मार्गदर्शक धर्म है तो आज संसार में विकृत स्थिति नहीं होती। वास्तव में इस संसार में न कोई हिन्दू न कोई मुसलमान न कोई ईसाई है। यह मनुष्यों द्वारा मनुष्यों पर थोपे मत है। मनुष्यमात्र का धर्म व मत तो केवल ईश्वरीय मत वैदिक धर्म है। इस भंयकर अलगाववाद की स्थिति तभी समाप्त होगी जब सृष्टि में प्रलय आयेगा। यह विकट नासूर बन गये हैं। यदि मनुष्यों में सुबुद्धि आ जाये तो केवल महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रदत वेदज्ञान व आर्यसमाज जो मनुष्य मत व वैदिक धर्म व विज्ञान के अनुसार चल रहा है। यदि सारा संसार उक्त ईश्वरीय व्यवस्था में चलने लगे तो वातावरण आज भी बदल सकता है।

भारतवर्ष में धर्म निरपेक्ष मान्यता व कानून से लाभ या हानि-ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान धर्म सदैव एकरस रहता है। धर्म का अर्थ है जिस पदार्थ के गुण, कर्म और स्वभाव सदैव एक समान बने रहें और सभी प्राणियों में परोपकार बना रहे जिसमें निज स्वार्थ न्यून और परमार्थ अधिक हो, उसे धर्म कहते हैं। ईश्वर ने सृष्टि के संचालन हेतु वैदिक धर्म सापेक्ष बनाया है। मानव समाज ने विशेषकर भारतवर्ष के धर्म निरपेक्ष कानून मान्यता मानने से सृष्टि प्रलय तक एक अशान्ति की दीवार खड़ी कर दी है और ईश्वरीय नियम का उल्लंघन किया है। भारतवर्ष ने अति उदारता से प्रत्येक मत मतान्तरों और रूढ़ि परम्पराओं की मान्यता दिखाकर मानव मानव को बांट दिया है।

एक उदाहरण जब संसार में कोरोना जैसी भंयकर महामारी फैली थी सब ओर त्राहि-त्राहि मची थी। किन्तु भारतवर्ष के

मुसलमान मस्जिदों में हजारों को जमा करके भंयकर बीमारी को बढ़ा रहे थे और अर्नगल ब्यान देकर धर्म निरपेक्षता की दुहाई देकर भारत में विष घोल रहे थे। ये कैसी धर्म निरपेक्षता है जिससे मानवता मर रही हो। भारत के लिए यह विचारणीय स्थिति है।

ईश्वर ने सब प्राणियों के सर्वसुख के लिए वैदिक धर्म सापेक्ष ज्ञान दिया है-ईश्वर ने सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, अग्नि, वनस्थिति अन्य आदि सबके लिए दिये है। किसी के लिए कोई भी भेदभाव नहीं रखा है। ईश्वर की सृष्टि रचना अद्भुत है। वह सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक है। इसी प्रकार से वेदों का ज्ञान भी दिया है। वेदों में कोई वर्गवाद, जन्म जातिवाद, इतिहास, अन्धविश्वास नहीं है और कोई रूढ़ि परम्परा नहीं है। वेदों में सत्य साम्यवाद है, वेदों में कुशल राजनीति नेतृत्व ज्ञान है। अस्तु मानवों ने ईश्वर का स्वरूप को न समझकर अपने-अपने कथित मत पंथ बनाकर ईश्वरीय आज्ञा को ठुकरा दिया है। मानव समाज को बांट दिया है। फलस्वरूप आज भ्रष्ट राजनीति, व्यवसाय, विद्या, काल्पनिक भगवान्, देवी-देवता, भिन्न-भिन्न विचारधारायें, व्यावसायिक रूखी शिक्षा पद्धति उत्पन्न करके सात्त्विक विचारों से मानव को दूर कर दिया है। ईश्वर द्वारा रचित पदार्थों से ही मानव सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करता है। इन पदार्थों में कभी भी किसी भी तरह कमी नहीं होती है। इसलिए ईश्वर ने संसार को धर्म सापेक्ष स्वभाविक रूप से बनाया है यदि यह बात संसार के लोगों को विशेष भारतवासियों के समझ में आ जाये तो हमारी प्रत्येक समस्या का हल हो जाय। अत: भारतवर्ष, जब तक वैदिक धर्म सापेक्ष देश नहीं बनता तक चहुंओर अशान्ति बनी रहेगी।

अन्धविश्वासों की भूल-भुलैया से निकलें-पिछले पांच हजार वर्षों के इतिहास को भारतीय समाज और संस्कृति का अन्धकार युग कहा जाना चाहिए, क्योंकि इस अवधि में अपने भारतीय समाज की स्थिति निरन्तर पतनोन्मुख ही रही। पतनशील प्रवाह इस स्थिति में पहुँच गया था कि इस प्रवाह को रोकने के लिए अठारवीं शताब्दी में युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भारत में जन्म लिया और सदियों से चली आ रही धार्मिक, रूढ़ि सामाजिक कुप्रथायें, भ्रष्ट राजनीति सदियों से पराधीनता भारत की इन सबके उन्मूलन के लिए आवाज उठाई, एक सुधारवादी वैचारिक क्रान्ति का सूत्रधार हुआ। भारतीयों में नई चेतना का संचार हुआ और धार्मिक-सामाजिक-राजनैतिक अराजकता के ठेकेदारों की चूलें हिल गयीं। उनको विचारों में परिवर्तन करने में मजबूर होना पड़ा है। किन्तु सभी पूर्वाग्रह से ग्रसित विचारों को पूर्णरूप से दूर नहीं कर सके हैं, जिससे अन्धविश्वासों का चलन अभी भी हमारे समाज को घुन की तरह खा रहा है।

धार्मिक अन्धविश्वास-महापुरुषों को ईश्वर मानकर और उनकी प्रतिमा बनाकर पूजना और उनके आदर्शों व चरित्रों पर न चलकर जनता में भ्रम फैलाना और यह उपदेश देना कि ये कार्य तो कथित ईश्वर ही कर सकते हैं। उन महापुरुषों के चरित्रों की अवेहलना करना आदि देवी-देवताओं के नाम पर बलि देना धर्म की आड़ में अन्ध परम्परायें फैलना, सिर पर देवता आने का ढोंग, धार्मिक क्षेत्र में ठगी करना, ईश्वर का अवतार लेना मानना, जादू-टोना, भूत-प्रेत का चक्कर, अनेक भ्रमित अन्धविश्वास फैलाकर जनता को ईश्वर से बहुत दूर करना आदि-आदि।

सामाजिक अन्धविश्वास-व्यर्थ जाति-वाति छुआ-छूत मानना, दहेजप्रथा, जादू चमत्कारों का प्रदर्शन फलित ज्योतिष का चक्कर, कर्मवादी न बनाकर भाग्यवादी बनाना, अपने कर्म फल का दोष ईश्वर पर देना।

अन्धविश्वास एक सामाजिक कोढ-पिछड़ेपन का पोषक अन्धविश्वास, शिक्षा को आध्यात्मज्ञान न देकर व्यवसायी बनाना, अवतारों की पलटन, पूर्वाग्रह की अनैतिक परम्परा नहीं ओदिच्य देखें। विवेकहीन कुप्रचलन, कुण्डली व मूहर्त का अज्ञान, मृतक भोज, फैंशन के नाम पर चुस्त कपड़े, परिवार में बड़ों का आदर न करना, उत्सवों के नाम पर दिखावा, शादी में कोकटल पार्टी गरीब-अमीर की दीवार, वर कन्या के गुण कर्म स्वभाव न मिलाकर कुण्डली मिलान आदि अनेक कुप्रथायें हैं।

राजनैतिक अन्धविश्वास-विद्वान् व सत्यवादी को न जिताकर भ्रष्टचारी व धनाढ्य प्रभावशाली को नेतृत्व देना अन्धविश्वासी एवं अनपढ़ या जो धर्म का मार्ग नहीं जानते, जड़ व चेतन की परिभाषा नहीं जानते ईश्वर का सत्य स्वरूप को नहीं पहचानते तथा जो स्वार्थी और अहंकारी हो उसको जनता का नेतृत्व करने का कोई अधिकार नहीं है। ऐसे विचारों वाले प्रजा के साम्यवाद दुश्मन तो हो सकते हैं, किन्तु सर्जन नहीं कर सकते हैं।

संम्पर्क-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
मो० 9411512019, 9557641800

एक आदर्श परिवार जिसका राजनीति, समाजसेवा व आर्यसमाज में उल्लेखनीय योगदान रहा

❑ मा० महेन्द्र छिक्कारा

रोहतक जिले (वर्तमान में झज्जर) के बेरी तहसील के समीप बाघपुर गांव में चौ० शीशराम आर्य के घर चार सुपुत्रों ने जन्म लिया। यद्यपि चौ० शीशराम के ज्येष्ठ पुत्र प्रो० शेरसिंह जी की संपूर्ण जीवनी लिखना मेरे जैसे लेखक के लिये असम्भव है। फिर भी इन चारों भाइयों का जो समाज के प्रति योगदान रहा है वह वास्तव में प्रेरणादायक है। इनके पिता चौ० शीशराम आर्य और इनके ताऊ चौ० हरनारायण आदि वास्तव में बाघ (शेर) थे। आर्यसमाज के प्रख्यात संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी और स्वामी स्वतंत्रानन्द जी तथा महात्मा गांधी जी के विचारों से ओत-प्रोत होकर शेर की तरह कभी पीछे न हटने वाला साहसिक व ऐतिहासिक कार्य कर दिखाया, जिसकी चर्चा आज तक भी होती है। काद्यान गोत्र में उत्पन्न श्री हरनारायण और चौ० शीशराम आर्य ऋषि दयानन्द के छुआछूत के प्रति जागृति व वर्ण-व्यवस्था से सहमत होकर कोई भी त्याग व कठिनताओं का सामना करने के लिये तत्पर रहते थे। स्वतंत्रता आन्दोलन में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। उनके दलितोद्धार और अदम्य साहस की एक बानगी चन्द शब्दों में पाठकों को शिक्षा, कृतज्ञता व प्रेरणा के लिये लिख रहे हैं।

प्रसिद्ध इतिहासकार ठाकुर देशराज अपनी पुस्तक जाट इतिहास के पृष्ठ नं० 518 पर लिखते हैं "रोहतक जिले में बेरी कस्बे के पास एक मील भीतर बाघपुर नामक एक गांव है। वहां के चौधरी शीशराम जी ने हरिजनों के लिये कुआं बनवाकर हरिजनों को सबसे पहले कुएं पर चढ़ाया। इस कार्य से आप और भी प्रसिद्ध हो गये और आर्यसमाज के कार्यों में भी पूरा सहयोग व भाग लेते रहे। इस अद्भुत आश्चर्यजनक व क्रान्तिकारी कार्य के परिणामस्वरूप समस्त बिरादरी का कोप-भोजन बनना पड़ा। यह घटना 26 जनवरी 1929 की है। एक विशेष-वर्ग के शोर मचाने से जाति से बहिष्कार अर्थात् हुक्का-पानी बन्द, लेकिन ऋषि दयानन्द के मिशनरी इन बातों से विचलित नहीं होते हैं। केवल हरिजन भाइयों के लिये कुआं ही नहीं बनवाया, बल्कि उनके साथ बैठकर सहभोज भी किया। उन दिनों यह बहुत ही साहसिक कार्य था। इसी तरह के एक कार्य के लिये भक्त फूलसिंह जी को भी बलिदान होना पड़ा था। इन्हीं श्रेष्ठ पुरुष चौधरी शीशराम जी आर्य से चार पुत्ररत्न उत्पन्न हुए जेष्ठ पुत्र प्रो० शेरसिंह, विजय कुमार, ओमप्रकाश व श्री राजेन्द्र कुमार सबसे छोटे थे। गीता में एक श्लोक आता है उसी को मध्येनजर रखते हुए इस आदर्श परिवार का संक्षिप्त इतिहास लिखा जा रहा है। श्लोक इस प्रकार है-

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ।
एतद् बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत॥

"अर्थात् हे अर्जुन महापुरुषों के चरित्र श्रवण तथा अध्ययन से मनुष्य की आत्मशुद्धि अवश्य होती है, लेकिन वह कृत-कृत्य तभी होता है जब सुनकर व पढ़कर उन जैसा आचरण करता है।"

प्रोफेसर शेरसिंह

1. **जन्म**-11 अगस्त 1917 गांव बाघपुर कस्बा बेरी, (तत्कालीन जिला रोहतक)

2. **शिक्षा**-बेरी से मैट्रिक तथा पिलानी से एफ०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। दिल्ली के प्रसिद्ध रामजस कॉलेज से गणित में बी०ए० (आनर्स) और एम०ए० पास किया। 1938 में एम०ए० पास करने के पश्चात् लाहौर से आपने बी०टी० पास की।

3. **सर्विस**-सर्वप्रथम आप हैदराबाद के केशव मेमोरियल हाईस्कूल के मुख्याध्यापक नियुक्त हो गए। तत्पश्चात् भरतपुर में जया महारानी इंटर कॉलेज में गणित के प्रोफेसर के स्थान पर आपकी नियुक्त हो गई। जाट कॉलेज रोहतक खुलने पर जाट कॉलेज में आपकी नियुक्ति हो गई। 1945 में जाट संस्था के चुनाव में बड़ी जदो-जहद हुई और इस चुनाव में काद्यान व जाखड़ गोत्र में से किसी को भी कॉलेज की कार्यकारिणी में स्थान नहीं दिया गया। आप दीनबन्धु छोटूराम को अपना आदर्श राजनीतिक पुरुष मानते थे। नौकरी छोड़कर छोटूराम जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प लेकर राजनीति में कूद पड़े।

4. राजनीतिक सफर-(क) पंजाब असेंबली में कप्तान दलपतसिंह को हराकर तहसील झज्जर से एम०एल०ए० चुने गए और पार्लियामेंट सैक्ट्री रहे।

(ख) स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 1952 के चुनाव में आप दूसरी बार विधायक बने और सरदार प्रतापसिंह कैरों के मन्त्रिमण्डल में आप पंजाब के उपमुख्यमंत्री बने।

(ग) वर्ष 1957 में आप तीसरी बार विधायक बने।

(घ) 1962 में एम०एल०सी० बने और हरयाणा राज्य अलग बनवाने के लिये जो कमेटी बनी उसके आप चेयरमैन बने।

(ङ) 1967 में लोकसभा के चुनाव में आप एम०पी(ख) चुने गये और केन्द्र में शिक्षा, संचार, रक्षा व कृषि राज्यमंत्री बने।

(च) 1971 में भी आप फिर एम०पी० बने और भारत में संचार राज्यमंत्री बने।

(छ) 1977 में प्रो० साहब तीसरी बार एम०पी० बने और इस बार भी केन्द्रीय राज्य मंत्री बने। प्रो० शेरसिंह ने संचार मंत्री रहते हुए स्वामी विरजानन्द दण्डी और स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति में डाक टिकट भी चलवाया था।

आन्दोलनों में हिस्सा व नेतृत्व करना

(क) जब आप पंजाब के उप-मुख्य मंत्री थे तो हिन्दी और गुरुमुखी में पक्षपात देखकर आपने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और जेल भी गये।

(ख) गोहत्या बन्द करवाने के लिये एक बड़े आन्दोलन में अपने घनिष्ट मित्र व सहयोगी स्वामी ओमानन्द जी का साथ दिया।

(ग) हरयाणा अलग राज्य बनवाने के आन्दोलन में आप तथा चौ० देवीलाल जी, चौ० बंसी लाल और स्वामी ओमानन्द जी ही प्रमुख नेता व आंदोलनकारी थे। सभी को जेल की हवा भी खानी पड़ी।

(घ) चण्डीगढ़ शहर को लेकर अपना-अपना हक पंजाब और हरयाणा जता रहे थे। बहुत गरम वातावरण बन गया। उस समय पंजाब वालों ने फेरुमान को आमरण अनशन पर बिठा दिया। दिल्ली के अन्दर चौ० देवीलाल जी, प्रो० शेरसिंह जी, चौ० बंसीलाल जी, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जी भी बैठक कर रहे थे और पंजाब वालों के दबाव को कम करने के लिए वे हरयाणा से भी कोई व्यक्ति आमरण अनशन पर बिठाना चाह रहे थे। व्यक्ति मिल नहीं रहा था तो इस पर प्रो० साहब ने कहा कि व्यक्ति तो है बशर्ते वो हां भी कह दे। उसी समय खोज कर गुरुकुल झज्जर के आचार्य भगवान्देव जी को बुलवाया। आचार्य जी ने कहा कि तुम राजनीतिज्ञ लोग बड़े चतुर होते हो। मैं बैठ तो अनशन पर जाऊंगा, लेकिन उठूंगा अपनी मरजी से। माहौल गंभीर हो उठा। इसी पर आचार्य जी ने कहा कि घबराओ नहीं आदमी में दे दूंगा और पक्का आदमी दूंगा। आचार्य जी के कहने से श्री उदयसिंह मान जी आमरण अनशन पर बैठे। कहानी लम्बी है आप बहुत से तो इसे को जानते भी हैं।

(ङ) हैदराबाद आन्दोलन में भी प्रो- साहब की अहम भूमिका रही।

(च) हिन्दी आन्दोलन के सूत्रधार रहे और स्वामी ओमानन्द का भरपूर सहयोग करके इस आन्दोलन को सफल बनाया।

(छ) शराबबन्दी आन्दोलन में भी आपका बहुमूल्य योगदान रहा जिसे कभी नहीं भुलाया जा सकता।

लेखक-आप एक अच्छे लेखक भी थे। 1936 से उन्होंने पत्रिकाओं में लिखना शुरू किया था। श्रीराम शर्मा के समाचार पत्र 'हरियाणा तिलक' में छपने वाले उनके लेखों से अंग्रेज सरकार भी थर्रा उठी थी। 'जागृत हरयाणा' नाम से एक पत्रिका भी प्रारम्भ की थी।

शिक्षा के प्रति योगदान-12 वर्ष की आयु से ही आप पर आर्यसमाज का रंग चढ़ गया था। जब भी आपको सरकारी ताकत का अवसर मिला आपने सदैव आर्यसमाज की सेवा की। सर्वप्रथम गुरुकुल झज्जर में आपने वहां की शिक्षा प्रणाली को मान्यता दिलवाई, बिजली का कन्केशन भी आपने गुरुकुल को दिलवाया। समस्त गुरुकुलों को आपने मान्यता दिलवाई। आप आर्यसमाज की शिरोमणि सभा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कई बार अध्यक्ष रहे और गुरुकुल झज्जर के आजीवन कुलपति भी आप थे। आपने 1945 में श्रीमती प्रभात शोभा से अंतर्जातीय विवाह करके एक मिशाल कायम करी जो उस समय एक असम्भव-सा कार्य था। कॉलेज नाहड़, दूबलधन, केन्द्रीय विद्यालय झज्जर, एम०डी० यूनिर्वसिटी, पी०जी०आई० रोहतक व ढेर सारे स्कूलों को अपग्रेड कराया। नेहरू कॉलेज झज्जर

के निर्माण तथा रोहतक में दूध उत्पादन केन्द्र के निर्माण में भी आपका अहम योगदान रहा।

गुरुकुल कांगड़ी के भी आप वर्षों तक कुलपति रहे। समाज, शिक्षा, राजनीति, आर्यसमाज के प्रति उनके कार्यों को सदैव-सदैव के लिये याद किया जायेगा। प्रो० शेरसिंह एक ऐतिहासिक श्रेष्ठ पुरुष थे। वह दिन भी आ गया जब आपने अपनी प्रेरणादायक पारी खेलकर 5 सितम्बर 2009 को इस संसार से विदा ली। ऐसे त्यागी, तपस्वी, ईमानदार, बुद्धिमान्, मनस्वी, नम्र, कुशाग्र बुद्धि, निर्व्यसन और ऋषि दयानन्द के सच्चे मिशनरी बहुत कम इस संसार में पैदा होते हैं।

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पर रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दिदावर पैदा॥

विजय कुमार काद्यान-आप भी बड़े भाई प्रो० शेरसिंह जी की तरह ईमानदार व कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे। नायब तहसीलदार के पद से सेवारत होकर आप उपायुक्त के पद तक पहुंचे। स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी का बड़ा स्नेह इन पर रहता था। श्री विजय कुमार जी सभा की तरफ से शराबबन्दी आन्दोलन हरयाणा के संयोजक बनाए गए। उनके अथक मेहनत व प्रयास के परिणाम स्वरूप ही चौ० बंसीलाल जी तत्कालीन मुख्यमन्त्री हरयाणा ने शराबबन्दी की घोषणा की। आपकी ईमानदारी की चर्चा आज भी अधिकारियों में होती है।

चौ० ओमप्रकाश बेरी-प्रत्यक्ष में ऐसा देखने में आता है कि बहुत कम व्यक्ति सेवार्थ राजनीति में आते हैं, लेकिन चौ० शीशराम आर्य जी ने अपने सभी सुपुत्रों को ऐसे संस्कार प्रदान किये जिससे उनके खून में ही परोपकार का प्रवाह संचार करता रहा और आज भी कर रहा है। ओमप्रकाश बेरी जी ने अपनी वकालत की शिक्षा पूरी करके वकालत के कार्य में ही 1962 से 1982 तक बतौर वकील का कार्य किया। इसके साथ-साथ सामूहिक, व्यक्तिगत व अन्य कार्य आप बिना किसी भेदभाव व लालच के करते रहे। सन् 1982 में श्री ओमप्रकाश जी बेरी पहली बार विधायक बने। चौ० भजनलाल भी विधायक थे। उस समय का आया-राम, गया-राम और माया-राम का बहुत बड़ा खेल हुआ और समस्त हरयाणा का आज तक भी उन घटनाओं को स्मरण करके शिर शर्म से झुक जाता है। लेकिन धन्य है ओमप्रकाश बेरी जी ने बड़े से बड़े पद को ठुकरा कर अपने हल्के व जनता की सेवा को ही सर्वोपरि समझा। 1984-85 में राजीव लौंगोवाल समझौता जो हरयाणा के हित में नहीं था आपने उसका डटकर विरोध किया।

अपने पद से त्यागपत्र देकर चौ० देवीलाल जी के साथ मिलकर एक बड़ा आन्दोलन खड़ा किया जिसके समक्ष सरकार को झुकना पड़ा। सन् 1991 में चौ० ओमप्रकाश बेरी दूसरी बार विधायक बने। मुख्यमंत्री भजनलाल बने और ओमप्रकाश जी को आकलन कमेटी का चेयरमैन बनाया गया। चेयरमैन रहते हुए दक्षिणी हरयाणा के पानी की चोरी का पता लगाया जो हिसार से सिरसा जा रहा था।

इसके अतिरिक्त उस समय नई नियुक्तियों में भी बंदर बांट हो रही थी। चौ० भजनलाल जी मनमानी कर रहे थे। इन दोनों मसलों को विधानसभा में ना उजागर करने के उपलक्ष्य में बेरी जी को मंत्री पद तक का प्रलोभन दिया गया, लेकिन ओमप्रकाश बेरी जी सत्य और हक पर अडिग रहे। परिणामस्वरूप मुख्यमंत्री महोदय ने आपको पार्टी से ही निष्कासित कर दिया लेकिन बेरी जी को जनता के हृदय से तो वह नहीं निकाल पाये।

श्री ओमप्रकाश जी बेरी अन्याय, भेदभाव, तानाशाही व अधर्म के सामने नहीं झुकना सीखे हैं। इनके आदर्शों से हमको शिक्षा लेनी चाहिए। सबसे छोटे भाई श्री राजेन्द्र सिंह बैंक में अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हुए। आपका जीवन भी उत्तम रहा।

विक्रम काद्यान-कम ही परिवार पाये जाते हैं जिनकी चार पीढ़ी जनता की सेवा के लिये समर्पित हो। श्री विक्रम काद्यान जी युवा हैं और वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष हैं। बड़ी ईमानदारी, निष्ठा और अपने पूर्वजों के ही पदचिह्नों पर चलकर जनता की सेवा में प्रयासरत हैं। श्री विक्रम काद्यान जी सुशिक्षित व नम्र स्वभाव के हैं।

आप भी बेरी हल्के की सेवा में प्रयासरत हैं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि यह परिवार इसी प्रकार मानव जाति की सेवा करता रहे। अन्त में मैं इन दो पंक्तियों के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूं-

हमें भी याद रखे जब लिखे इतिहास गुलशन का।
कि हमने भी लुटाया है चमन पर आशियां अपना॥

लेखू से बने धर्मवीर आर्य.... पृष्ठ 10 का शेष...

होगा और बला भी टल जाएगी। पर पंडित जी अपनी धुन के पक्के थे। मिर्जा गुलाम अहमद की कोठी पर क़ादियान पहुँच गए। दो मास तक पंडित जी कादियान में रहे पर मिर्जा गुलाम अहमद कोई भी चमत्कार नहीं दिखा सका।

इस खीज से आर्यसमाज और पंडित लेखराम को अपना कट्टर दुश्मन मानकर मिर्जा ने आर्यसमाज के विरुद्ध दुष्प्रचार आरम्भ कर दिया। मिर्जा ने ब्राहिने अहमदिया नामक पुस्तक चंदा मांगकर छपवाई। पंडित जी ने उसका उत्तर तकज़ीब ब्राहिने अहमदिया लिखकर दिया।

मिर्जा ने सुरमाये चश्मे आर्या (आर्यों की आंख का सुरमा) लिखा जिसका पंडित जी ने उत्तर नुस्खाये खब्ते अहमदिया (अहमदी खब्त का इलाज) लिखकर दिया। मिर्जा ने सुरमाये चश्मे आर्या में यह भविष्यवाणी करी कि एक वर्ष के भीतर पंडित जी की मौत हो जाएगी। मिर्जा की यह भविष्यवाणी गलत निकली और पंडित इस बात के 11 वर्ष बाद तक जीवित रहे।

पंडित जी की तपस्या से लाखों हिन्दू युवक मुसलमान होने से बच गए। लेखराम जी एक श्रेष्ठ लेखक थे। आर्य प्रतिनिधि सभा ने ऋषि दयानन्द के जीवन पर एक विस्तृत एवं प्रामाणिक ग्रन्थ तैयार करने की योजना बनायी। यह दायित्व उन्हें ही दिया गया। उन्होंने देशभर में भ्रमण कर अनेक भाषाओं में प्रकाशित सामग्री एकत्रित की। इसके बाद वे लाहौर में बैठकर इस ग्रन्थ को लिखना चाहते थे; पर दुर्भाग्यवश यह कार्य पूरा नहीं हो सका।

[2] मार्च 1897 में एक व्यक्ति पंडित लेखराम के पास आया। उसका कहना था कि वो पहले हिन्दू था बाद में मुसलमान हो गया, अब फिर से शुद्ध होकर हिन्दू बनना चाहता हैं। वह पंडित जी के घर में ही रहने लगा और वही भोजन करने लगा।

6 मार्च 1897 को पंडित जी घर में स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र पर कार्य कर रहे थे। तभी उन्होंने एक अंगड़ाई ली कि उस दुष्ट ने पंडित जी को छुरा मार दिया और भाग गया। पंडित जी को हस्पताल लेकर जाया गया जहाँ रात को दो बजे उन्होंने प्राण त्याग दिए।

पंडित जी को अपने प्राणों की चिंता नहीं थी उन्हें चिंता थी तो वैदिक धर्म की। कदाचित् आज आर्यसमाज के अनुयायियों को पंडित लेखराम जैसी लगन लग जाए तो आर्यसमाज पुन: स्वर्ण युग जैसा हो जाए।

आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में देवऋषि विद्यापीठ नन्दगढ़ जींद में वार्षिक उत्सव मनाया गया। सर्वप्रथम वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ। छात्रों, अध्यापकों व अभिभावकों ने श्रद्धा से आहुतियां प्रदान कीं।

वैदिक यतिमण्डल की बैठक

वैदिक यतिमण्डल की एक आवश्यक बैठक दिनांक 27,28 मार्च 2024 को पश्चिम उड़ीसा के प्रसिद्ध गुरुकुल आश्रम आमसेना खरियार रोड नुआपडा में होगी। आर्यजगत् के ऋषि अनुयायी सन्तों-महात्माओं एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारी जनों से निवेदन है कि इस बैठक में अपना अमूल्य समय निकालकर 26 मार्च 2024 को सायंकाल तक पहुँचने का कष्ट करें।

निवेदक–स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

सम्पर्क सूत्र– 94370 70541, 94370 70615
90988 92558, 96170 82000

आवश्यक सूचना

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि जिन ग्राहकों का जो भी बकाया शुल्क बनता है, वह बकाया शुल्क सभा कार्यालय में जमा करें या मनीऑर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें ताकि हम आपकी पत्रिका समय पर भेजते रहें। शुल्क भेजते समय आप ग्राहक संख्या व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

–रघुवरदत्त, पत्रिका लिपिक, 7206865945

यज्ञ हेतु दान देकर पुण्य के भागी बनें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ किया जाता है और पर्यावरण की शुद्धि के लिए रोहतक जिले के सरकारी, गैर-सरकारी विद्यालयों और गाँव-गाँव में यज्ञ व वेदप्रचार का आयोजन किया जाता है। इस महायज्ञ में आप लोग अपने बच्चों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व अन्य उपलक्ष्यों पर दान देकर पुण्य के भागी बनें। संस्था सदैव आपकी आभारी रहेगी।

यज्ञ हेतु बैंक खाता

ACCOUNT NAME - ARYA PRATINIDHI SABHA HARYANA
BANK NAME - PNB JHAJJAR ROAD ROHTAK
Account No. 0406000100426205
IFSC - PUNB0040600
MICR - 124024002

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री .....

पता .....

.....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा